करबला की औरतों ने अपने बुजुर्गों से क्या पाया?

मोहतरमा अन्दलीब ज़हरा मुसवी बिजनौरी

यह सवाल सभी को, खासकर मुसलमानों को सोच विचार कर बुलावा देता है कि कर्बला में हाशमी मर्दों और औरतों ने जो कारनामें पेश किये हैं वह उन से किस तरह बन पड़े, और उनकी अगुवाई में दूसरे मर्दों और औरतों ने कैसे ऐसी सेवायें की जिनकी नज़ीर और मिसाल मौजूद नहीं। हम भी इंसान है आखिर हमसे अमल के मोजिज़े या चमत्कार क्यों नहीं ज़ाहिर होते। हमारे सामने भी धर्म और पंथ पर जुल्म और अत्याचार की बिजलियां गिरायी जाती हैं, लेकिन हमारे दिल पर क्यों इतना असर नहीं होता, जैसा कि असर कर्बला के शहीदों और कूफे व शाम के कैदियों ने लिया जब वक्त पड़ता है तो हम कुछ भी नहीं होते। तो क्या कर्बला वाले इंसान न थे। उनकी काया हड्डी गोश्त से तैयार न हुयी थी उनकी निगाह में मौत क्यों बाग़ का एक खूबसूरत फूल बनी हुयी थी, जिसकी महक से दिमाग को मज़ा मिलता है और आंखें रोशनी पाती हैं। हमारी उंगली में अगर सूई चुभ जाती है, तो हम इतना बेचैन हो जाते हैं कि घर भर इस तकलीफ को महसूस करता है, फिर कर्बला के मर्दों और औरतों ने खुश–खुश ऐसी हौलनाक और भयानक मुसीबतों का कैसे सामना किया! आज सदियों के बीत जाने के बाद जिनकी चर्चा से हम में से बहुत दिल वाले बेहोश हो जाते हैं, या कम से कम आंसू बहाते हैं, बेक़ाबू हो के मुंह से चीख निकल जाती है और मातम के लिए सीने पर हाथ पड़ जाते हैं। यह वाक़िए इतने प्रभावशाली हैं कि शताब्दियों बाद भी उनका प्रभाव कम नहीं होता, नाव नदी में है और तूफानी लहरें कुछ पत्नियां, कुछ मायें, बहनें अपने वारिसों, बच्चों और नातेदारों को एक पर एक नदी में डूबते देख रही हैं। घर में आग लगी है उसमें एक बीमार, दुर्बल भी है जो खुद बीमारी का बिस्तर छोड़ नहीं सकता। छोटे–छोटे बच्चे हैं जिनके दामन से आग की लपटें उठ रही हैं, जिन लोगों ने यह दृश्य देखे बल्कि इनमें भाग लिया किस दिल दिमाग़ के रहे होंगे। शताब्दियों के बाद तारीख में देखते हैं और धटनाओं का असर हम को बेताब कर देता है और जब कभी समां बंध जाता है तो हममें भी सत्य की सहायता और बातिल से टकराव के लिये जिन्दगी न्योछावर करने की भावना पैदा हो जाती है।

किस्से कहानियों में भी हमने ऐसे इन्सानों की चर्चा नहीं सुनी जिनका ज्ञान इतना अधिक हो जिनका शिष्टााचार इतना ऊंचा हो जिनकी संस्कृति इतनी बलन्द हो जो खुदा के इतने गहरे प्रेमी हो, जो सत्य के ऐसे पुजारी हों जिनके दिल में मानवता का इतना दर्द हो और बड़े से बड़ा बलिदान करके डर, भय, दुःख, दर्द के बजाय, जिनके मुख मण्डल पर गौरव और टिकाऊ खुशी

की लहरें दौड़ रही हों। कहीं इल्म और अदब, ज्ञान और साहित्य है तो खुदा का डर नहीं, खुदा का डर है तो दिल में ताक़त नहीं, ज्ञान और बोध है तो दिल भी मज़बूत है तो ज़बान में ज़ोर नहीं। लेकिन कर्बला में जिस तरह जानमाजें आबाद नज़र आती हैं उसी तरह रणभूमि भी शेरों की डकार से कांप रही है, जैसे मर्द अपने कमाल दिखा रहे हों। औरतों से उनके कमाल ज़ाहिर हो रहे हों। ऐसा लगता है यह इंसान नहीं है फरिश्ते हैं। लेकिन हमने तो फरिश्तों के ऐसे कारनामें न पढ़े न सुने।

विशेषकर कर्बला की वीरांगनाओं (खवातीन) की जांबाजी और बलिदान हमारी अचरज का विषय बने हुये हैं अगर हम इस सवाल का जवाब कुछ ही शब्दों में हम देना चाहें तो यह कहेंगे कि कर्बला के ऐतिहासिक लोगों खासकर महिलाओं की तरबीयत या दीक्षा, उनके बुजुर्गों ने की ऐसी दीक्षा किसी अन्य को नसीब नहीं हुयी। यह समझ में नहीं आता कि यह खवातीन (महिलांए) ऐसा भयानक तूफान कैसे पार कर गयीं। खुदा का डर, उससे अगाध प्रेम, आजादी का मज़ा सच कहने का साहस, संतोष, खुदा की आज्ञा पर राज़ी रहना कर्तव्य बोध ज्ञान और योग्यता की जैसी मिसालें कर्बला वालों को अपने घर में मिली, न वह कहीं घरों में देखने को आती हैं, न पाठशालाओं में और पीरों फक़ीरों के हुजरों में जिस घर में मर्दों में हज़रत अबूतालिब, दीन दुनिया में दोनों में हमारे सरदार हज़रत पैगम्बर[स०] हज़रत हमज़ा, जाफरे तैय्यार, हज़रत अली सरीखे बेनज़ीर इंसान हों और जिनके यश से माला माल होने वाले हज़रत सलमान फारसी, अबूज़र मिक़्दाद मीसमेतम्मार, अम्मार यासिर हों, जिनके घर का सेवक क़म्बर सरीखा आरिफ, ब्रह्मज्ञानी हों, जिस घर में जनाब अब्दुल मुत्तलिब की बेटियां उर्दा और सफिय्या हों, जहां जनाबे आमिना और जनाबे फातिमा बिन्ते असद हों हजरत खदीजा, हजरत उम्मे सलमा हों जैनब बिन्ते हजश हों, जिस घर की वादियों में उम्मे ऐमन और फ़िज़्ज़ा हों उस घर में अगर हुसैन[अ०] के जैसे इमामत और इंसानियत के ताजदार और जनाबे ज़ैनब और उम्मे कुलसूम सरीखी खातून हों अगर वहां जनाब–ए–सकीना पैदा हो गयीं तो आश्चर्य क्या?

कर्बला के इन शहीदों ने बहादुरी और जियालेपन का प्रदर्शन किया तो वीरता और बहादुरी इनकी मौरूसी शक्ति थी क्या बद्र में हजरत अली के सिवा किसी और के हाथ में फौज की पताका थी क्या अरब के मश्हूर और सरनाम पहलवान वलीद को हज़रत अली की तलवार के सिवा किसी और ने कत्ल किया क्या जब हज़रत हमजः और शीवा में जंग हो रही थी और दोनों आपस में गुथ चुके थे उस वक्त हजरत अली के सिवा किसी और ने हज़रत हमजः की जान बचाई और वलीद को दो टुकड़े किये? हजरत अली के अलावा कौन था कि जिस की तलवार ने बद्र की जंग में 70 कुफ्फार को क़त्ल किया और 70 को बन्दी बनाया?

ओहद की लड़ाई में तलहः बिन आवरदी ने जब पुकार के कहा मुसलमानों! तुम्हारा विश्वास तो यह है कि हम तुम्हारी तलवार से जहन्नम में जाते हैं और तुम हमारी तलवार से जन्नत में जाते हो तो फिर मुसलमानों में कोई ऐसा है जो मुझे जहन्नम में भेजे या खुद जन्नत में चला जाये इस तन्ज़िया और व्यंगात्मक वाक्य से किस की त्योरी चढ़ी? किस की गैरत में उबाल आया! क्या अली के अलावा किसी और ने उसके घमण्ड भरे सर को धड़ से अलग किया। खैबर के रण में मरहब की खबर किसने ली! अम्र बिन अबदेवुद जो अरब स्तम्भ कहा जाता था जिस की गिन्ती हजार बहादुरों के बराबर होती थी उसके घमण्ड का नशः किसने उतारा क्या अली की तलवार ने अरब के इस खम्भे को ढा के अरब की जाहिलियत को ध्वस्त नहीं किया! हुनैन, तायफ़ जमल और सिफ्फीन में किस की तलवार का लोहा माना गया। क्या सिफ्फीन की लड़ाई में जहां बद्र,

उहद और खंदक की तलवार आखिरी बार चमकी लशकर के अनेक भाग इमाम हसन, इमाम हुसैन, मुस्लिम बिन अकील और अब्दुल्लाह बिन जाफर, मोहम्मद बिन हनफियः और मोहम्मद बिन अबीबक्र आदि के जिम्मे न थे। और क्या जमल, सिफ्फीन में हाशिमी बहादुर जंग की तारीख बना के कर्बला नहीं आये थे हजरत जाफरे तैय्यार की जीवन गाथा ने कर्बला में हजरत अब्बास[अ०] के सामने जीवन लुटा देने की इन्तिहाई मिसाल थी हजरत हमजः[अ०] का कलेजः निकाल के चबाये जाने और हजरत अली अकबर[अ०] के सीने में बरछी का फल लगने में कितनी समानता है और सजदे में हजरत अली[अ०] के सर पर वार होने और सजदे ही की हालत में हजरत इमाम हुसैन[अ०] का सर कलम हुआ कितनी मिलती जुलती घटना है क्या हरीर की रात में दोनों पक्षों की फौजों की पक्तियों के बीच हजरत अली की जानमाज का बिछना और कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की नमाज़े खौफ ऐसी ही दूसरी मिसाल नहीं है बहरहाल मर्दों के कारनामों की चर्चा विस्तार से नहीं करना है इतना तो बस इसलिए लिखा गया कि शिक्षा दीक्षा का पूरा चित्र आंख के सामने आ जाये।

ख़वातीन ने अपनी उस पीढ़ी को जो उन्हीं की जाति (सिन्फ) से थी क्या दिया और कर्बला की देवियों के कारनामों में उनकी माओं का क्या हिस्सा है, सरसरी तौर से हम को इस वक्त यही समझना है। कर्बला की दुनिया में कासिम और अली अकबर को हथियार सजा के मरने को भेजने के लिए याकूब[अ०] और इब्राहीम[अ०] ऐसे पैग़म्बरों के ताक़तवर दिलों की जरूरत थी कर्बला की वीरांगनाओं ने कांटो भरी राह बड़ी बलंद नफ़सी से तय किया।

कम देखा गया है कि गुरू से शिष्य आगे निकल गये हों लेकिन कर्बला की ख़वातीन ने अपनी माओं से जो गुन पाये थे उससे बढ़ के जौहर दिखाये उन्होंने मां की गोद से जो सीख ली थी उसे बहुत ज़्यादा फैला के दुनिया के सामने प्रस्तुत किया।

हज़रत ज़ैनब[अ०] और कर्बला की दूसरी ख़वातीन अपने कुनबे की जिन बुजुर्ग औरतों की जीवन गाथा और शिक्षा से असर ले सकती थीं उनमें हज़रत सफीयः, अब्दुल मुत्तलिब की बेटी की भी गिनती होती है। सफीयः मां की तरफ से हजरत ज़ैनब की परनानी और बाप की तरफ से परदादी थीं आप हज़रत पैग़म्बर[स०] और हज़रत अली[अ०] की फुफीं थी खंदक की लड़ाई में पैग़म्बर ने और औरतों को एक खास क़िले में रखा था हस्सान बिन साबित उनकी सुरक्षा के उत्तरदायी बनाये गये थे। जब एक यहूदी क़िले पर चढ़ा तो जनाब सफीयः ने हस्सान से कहा उठो इसे खत्म कर दो हस्सान ने जवाब दिया अगर मुझ में इतना ही दम होता तो मैं हुजूर[स०] के साथ जंग के मैदान में ही क्यों न होता सफीयः ने खुद ही यहूदी को तलवार का निशाना बनाया और हस्सान से कहा अच्छा अब इसका सर तो क़िले के बाहर यहूदियों की तरफ फेंक दो। हस्सान बोले मुझ से यह भी नहीं हो सकता खुद सफीयः ने दुश्मन का कटा हुआ सर यहूदियों में फेंका यही हज़रत सफीयः थीं जो जंगे उहद में मुसलमानों की भगदड़ के बाद बरछी हाथ में लिये दुश्मनों को मार रहीं थी। हज़रत हमज़ा उनके भाई थे भाई की शहादत के बाद सफीयः यह कहके कि मैं हमजः की लाश देखूंगी वह क़त्लगाह की तरफ चल दीं उनके बेटे जुबैर ने हज़रत पैग़म्बर को बताया हुजूर ने फरमाया कि उनको वहां न जाने दो वापस बुला लो क्योंकि हिन्द (यज़ीद की दादी) ने उनका सीना चाक करके कलेजा निकाल के चबा डाला ओर दूसरे अंग भी काट के मद्दे कर दिये गये थे सफीयः को जब पैग़म्बर का हुक्म बताया गया तो वह पूछने लगी कि मुझे वापसी का हुक्म क्यों मिला है मैंने सुना है कि दुश्मन ने क़त्ल के बाद मेरे भाई की सूरत बिगाड़ दी है मैं इसलिए जाती हूं कि वह करूणा जनक दृश्य देखूँ और सब्र करूं और खुदा से इसके बदले (अज्र) की हक़दार बनूं। जुबैर ने सफीयः

का पैगाम हुजूर की खिदमत में पेश किया फरमाया कि अच्छा जाने दो जनाब सफीयः ने सिर्फ असाधारण बहादुरी और धर्य संतोष ही की मिसाल नहीं छोड़ी है बल्कि अदब में भी अपनी जगह बनायी है हुजूर की वफात पर मरसिया कहके अपनी अदबीशान जाहिर की और मरसिये में सियासी व मज़हबी प्रतिरोध व्यक्त करके अपनी जिम्मेदारी से भी मुक्त हईं यह सब गुण बस हजरत सफीयः तक ही सीमित थे बल्कि हाशिमी खादान की कुल औरतों में कम या ज़्यादा पाये जाते थे जनाब सफीयः की दूसरी बहन ''अरदी'' जिन्दगी की आखिरी सांस तक अपने अक़ीदे और विश्वास की रक्षा के लिये जान से खेलती रहीं वह जबान से हुजूर की हमेशा मददगार रहीं उन्होंने अपनी खानदानी फसाहत बलागत (वाक्य कौशल) हक के लिए वक़्फ़ कर रखा था। उन्होंने अपने प्यारे बेटे तालिब को हज़रत पैग़म्बर की कुमक के लिए खुद तैय्यार किया एक बार अबूजेहल कुछ लोगों के साथ मिल के हुजूर[स०] को सताने लगा तालिब से यह अत्याचार न देखा गया आपने अबूजेहल को इतना पीटा की वह बेदम हो गया अगर अबूलहब ने बाद में आके उसे छुड़ाया न होता तो तालिब उसकी जीवन लीला समाप्त ही कर देते जब मां को इसकी जानकारी हुयी तो अरदी ने कहा कि तालिब की जिन्दगी का यादगार दिन वही था जब उसने हक के लिये अपने मामूं अबूजेहल की खबर ली अदरी ने अपने साहित्य से जिस तरह हुजूर के जीवनकाल में इस्लाम की सेवा की पैग़म्बर की वफ़ात के बाद भी इसी राह पर चलती रही आपने हज़रत का जो मरसिया कहा है उसमें आप की मज़हबी व अदबी रूह पूरी ताक़त के साथ नुमांया है।

हज़रत अमीरूल मोमिनीन की शहादत के बाद जब कि आप बहुत बूढ़ी हो चुकी थीं लेकिन आप की मज़हबी रूह में कोई कमजोरी नहीं आयी अमीर मुवाइयः के दरबार में बड़ी जुर्रत और जियालेपन से भाषण किया हज़रत अली[अ०] का हक़ दलीलों से सिद्ध किया और अमीर मुआवियः की हट धर्मी बेधड़क बयान की।

क्या जनाबे सफीयः की सहनशीलता का आदर्श बिल्कुल रायगां गया, सर्वथा व्यर्थ गया क्या भाई (जनाबे हमजः) की लाश पर उनका इसलिए पहुंचने का वाकिअः कि खुदा की राह में शहीद हुये भाई की हालत देख कर सब्र करें और खुदा से बदले की उम्मीदवार हों, इतिहास की आखिरी मिसाल बन के रह गया! क्या कर्बला में कोई बहन इससे हजार गुना दर्दनाक मन्जर अपने भाई के देख के सब्र व जब्त, संतोष और संयम का पहाड़ नहीं बनी रहीं! और क्या हज़रत सफीयः की तरह किसी खातून ने कर्बला में अपनी बेबसी की अवस्था में अपने बचे हुए परिवार जनों और साथ की दूसरी औरतों की सुरक्षा का कर्तव्य नहीं निभाया। अगर इनको अपने मिशन की तरफ से बंदी बन जाने का आदेश न मिला तो क्या यह बीबियां हज़रत अब्बास, हज़रत अली अकबर और हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के शहीद हो जाने का दुश्मनों को एहसास होने देती।

और क्या जनाबे अली अकबर का यज़ीद की जमात के मुकाबले के लिये लड़ाई के मैदान में कारनामः इस बात को ज़ाहिर नहीं करता कि उनकी मां जनाबे लैला ने उनका पालन पोषण कितना अच्छा किया था यजीद जनाब लैला का सगा ममेरा भाई था जिस तरह तालिब ने अपने मामूं अबूजेहल से टक्कर ली अकबर ने भी यजीदी फौज से आखिरी सांस तक मुकाबिला किया। बेशक जनाब अर्दी ने अमीर मुआविया के दरबार में निहायत मुंह तोड़ और होश उड़ा देने वाली तक़रीर की लेकिन जनाबे ज़ैनब ने जिन हालात में इब्ने जियाद और यज़ीद के दरबारों में तक़रीरें की हैं वह आप अपनी मिसाल है जनाब अर्दी के सामने अभी तक उनकी विजय पूर्ण फातिहानः तारीख थी, जंग के मैदान में कुल मिला जुला के उनकी आंखों ने दुश्मनों ही लोग जियादः देखे अगरचे एक अधिकार सम्पन्न शासक के दरबार में यह आग उगलने वाली तक़रीर बहुत

महत्व रखती है। लेकिन यज़ीद और इब्ने ज़ियाद के दरबार की तक़रीरों के मुकाबले में इनको नहीं लाया जा सकता। कर्बला का गंजे शहीदां (शहीदों की सामूहिक कब्र) देखने के बाद, सरों की चादरें दुश्मनों द्वारा छिन जाने के बाद बारह गले एक रस्सी में बंध जाने के बाद और बगैर हौदे के ऊंटों पर दर ब दर घुमाये जाने के बाद दरबारों तमाशाईयों की भीड़ में जहां भाई का कटा हुआ सर सोने के थाल में रखा हुआ है और बधाई के बाजे बज रहे हैं और शासक के तनख़्वाहिये चापलूस गुलाम विषय की बधाई दे रहे हैं ऐसे आलम में फिर होश हवास को संभाल, उद्देश्य का उद्धोष, हक की जीत, नाहक़ की हार का ऐलान, हिम्मत और जियाले पन की एक ऐसी बेनज़ीर मिसाल है जिस में पोती का पाया दादी से उतना हीं ऊंचा मालूम होता है जैसे हिमालय की चोटी दुनिया के किसी छोटे से पहाड़ के मुक़ाबले में गगन चुम्बी लगती है।

जनाबे खदीजा के बारे में भी इतिहास ने बहुत सुनहरे गुण पेश किये हैं जनाब खदीजाः जनाब जैनब की सगी नानी हैं। इस्लाम से पहले सारा अरब "आप को ताहिरः कहता था। इतिहास के शब्द उनके बारे में यह है कि उनका अनगिनत धन, बेनजीर खुलूस (अद्भुत सत्यता) और महानतम कुर्बानी ने इस्लाम की नींव मजबूत की। अगरचे उनकी अपनी गोद में बैठने का मौका जनाब जैनब को नहीं मिला मगर यह नहीं कहा जा सकता कि जनाब जैनब को उनके कौशल का कोई हिस्सा नहीं मिला। पैग़म्बर के घर में हज़रत खदीजा एक आदर्श महिला के रूप में याद की गयीं उन्होंने सत्य के लिए अरब के कबीलों का विरोध मोल लिया उन्होंने अपना सारा माल, सारा समय और सारी सत्ता इस्लामी आन्दोलन पर कुर्बान कर दीं और जिस तरह हज़रत पैग़म्बर और दूसरे बनी हाशिम कुरैश की नजर बंदी की मुसीबत झेलते रहे जनाब खदीजा ने भी बहुत खुले मन के साथ बर्दाश्त किया।

जनाबे खदीजा की जिन्दगी इस्लाम में इतनी सम्मानित थी कि उनकी मिलने जुलने वालियां जब पैग़म्बर आवास में आती थीं तो उनका विशेष रूप से ध्यान रखा जाता था जनाब खदीजा के निधन उपरांत भी इन लोगों का पैग़म्बर के घर में बड़ा सम्मान था। एक बार हज़रत पैग़म्बर की एक बीबी ने कहा भी कि आप उस बुढ़िया का बहुत ख़्याल करते हैं हुजूर[स०] ने फरमाया कि यह खदीजा के ज़माने में आया करती थीं पुराने व्यवहार की रक्षा ईमान की निशानी है। हुजूर[स०] खुद और खूला, अस्मा बिन्ते अमीस और मक्के की दूसरी औरतों से कर्बला की फातिमी खवातीन को उनके नानी के हालात सुनने में न आते होंगे क्या जनाब जैनब का इमाम हुसैन[अ०] के साथ मदीने से सफर और कर्बला की सभी भयानक तकलीफों को झेलना और शाम के कारागार में बंदी अवस्था में हज़रत ज़ैनब को अपनी नानी हज़रत खदीजा से कुछ भी सहन शक्ति नहीं मिली जबकि वह रसूलुलाह के साथ शाबे अबीतालिब में नज़र बंद थी हज़रत पैग़म्बर की एक बीबी जनाब जैनब बिन्ते ज़हरा जो सौतेली नानी भी थीं और नाना और बाप की फुफी की लड़की भी थीं सन 20 हिजरी तक जिन्दा रही हैं। 31 साल की उम्र में उनका निकाह हुआ, और 50 साल की उम्र में उनका इन्तेक़ाल हुआ करबला की ख़्वातीन की इनकी बुजुर्गानः शफक़त (स्नेह) का भी आनंद मिला इनका मजदूरी पर काम करना चमड़े रंग के अपनी ज़िन्दगी बसर करना अनाथों और रांडों की देखभाल करना यह ऐसे सदगुण हैं जो कर्बला की औरतों का विरसः (थाति) है हजरत उमर का बारह हजार दीनार इनकी पेन्शन मुकर्रर करना और उनका यह समझना कि हम उस दौलत से अपने हाथ को मैला करके सांसारिक कामनाओं में उलझ जायेंगे मजबूर वजीफः कुबूल करना और खुदा से यह दुआ करना कि मुझे अब आगे सरकार की मेहरबानी का ऋणी न होना पड़े और रूपये को उसी वक्त अजीज़ों और जरूरतमन्दों में बांट देना एक ऐसा आचरण है जिससे उनकी दर्यादिली, गरीबनवाजी, दानवीरता और जो कुछ मिले उस

पर संतुष्ट रहने का इजहार है।

जब कर्बला की खवातीन की तरफ से यजीद से कहा गया कि हमारा लूटा हुआ माल हमको वापस कर दो और यज़ीद ने जवाब दिया कि तुम को तुम्हारे लुटे हुए माल से बहुत बढ़ कर दिया जायेगा तो इन बेनियाज़ खवातीन की तरफ से कहा गया कि हम को तुम्हारे माल की जरूरत नहीं हमने अपना लूटा हुआ माल इसलिये मांगा है कि उसमें हमारी दादी हजरत फातिमा[स०] का चर्खा, चादर, हार और क़मीस है मगर यज़ीद ने आग्रह किया और दो सौ दीनार बढ़ा के दिया अहले–बैत ने उसी वक्त यह धनराशि फक़ीरों ओर ग़रीबों को बांट दी।

हज़रत पैग़म्बर की एक पत्नी उम्मे सलमा की सीख और स्नेह कर्बला की ख़वातीन के साथ कितनी थी। इसका अन्दाजः लगाने के लिये हमें अनुमान की भी जरूरत नहीं। कर्बला के वाकिए के बाद तक आप से कर्बला की ख़वातीन को लाभ उठाने का मौक़ा मिला। आप बड़े रूत्बे की बीवी थी। जनाब खदीजः के बाद आप का सुलूक हुजूर[स०] की अवलाद और परिवार के साथ ऐसा था कि यह महसूस नहीं हो सका कि उनके सरसे शफीक मस्तामयी मां का सायः उठ गया है। उनका जीवन अहले बैत की तारीख में यूं घुला मिला है जैसे दूध में शकर ''तत्हीर'' वाली आयत उतरने में आप के घर का ज़िक्र आता है। जनाब सैय्यदः के निकाह के मौके पर आप का नाम आता है। हसनैन[अ०] की पैदाइश के अवसर पर नाम आता है। खिलाफत के विवाद में आप का नाम आता है। ''जमल'' और ''सिफ्फीन'' की लड़ाईयों में आप का नाम आता है। कर्बला की त्रासदी के आरम्भ और अंत में आप का नाम आता है। हज़रत उम्मे सलमा एक यात्रा करने वाली, विद्यावती, साहित्य सेवी, लेखिका, कवित्री, धर्म ज्ञानी और राजनीतिक ठीका कार थीं। अपने युग की सरकारों पर आप ने जीवट के साथ आलोचनाएं की हैं। अपने बेटे उमर बिन सलमा को हक और न्याय की सहायता के लिए हज़रत अली[अ०] के सुपुर्द कर दिया। उनकी बेटी जैनब के बारे में कहा जाता है कि मदीने की औरतों में उनसे ज्यादा कोई धर्म विधि के मर्म जानने वाली न थीं। अगर उनकी जीवन गाथा सामने रखी जाये तो कर्बला की खवातीन के आचरण के बहुत से सोते मालूम हो सकते हैं।

जनाब सैय्यदा[अ०] ने अस्मा बिन्त अमीस से जानकारी चाही कि हब्श में औरत का जनाजः उठाने के लिए कैसे सन्दूक़ में लाया जाता है तो जनाब अस्मा ने नमूना बना कर पेश किया और जनाब सैय्यदा ने अपने लिये उसे पसन्द किया तो अचरज नहीं कि पैग़म्बर की रोम की रहने वाली पत्नी जनाब मारियः क़िब्तियः की भी कुछ बातें उनको पसन्द आयी हों। खुद जनाब फ़ातिमा[स०] ने अपने जिगर के टुकड़ों को अपने किन–किन सदगुणों का वारिस बनाया। यह हिस्सा एक तफ्सीली बयान का बुलावा देता है। लकिन हमने ऊपर लाज़िम किया है कि हम अपनी मंजिल बड़ी तेज चाल से तय करेंगे, और अपने विषय पर हलकी रोशनी डालते हुए लेख समाप्त करेंगे।

जनाब फ़ातिमा जहरा[स०] का ज्ञान, उनकी ग़ैरत, सच बात कहने में उनका जीवट और जुर्अत, उनकी ज़िन्दगी की सादगी, उनकी फ़साहत व बलाग़त, राजनीति पर उनकी टीका यह चीज़े ऐसी हैं जिसमें उनकी अवलाद की आचरण–रचना के लिये काफी सामग्री है। अमीरूल मोमिनीन के इस इर्शाद में कि ''फातिमा इबादत में मेरी बड़ी अच्छी मददगार है, जनाब सैय्यदा की इबादत गुजारी की एक तस्वीर है जिसके नूर से हमारी मारफत की आंखें चौंधिया जाती हैं।

हुजूर[स०] का अपनी बेटी से सवाल कि औरत के लिये सबसे अच्छी चीज़ क्या है? और मासूमः का बताना कि वह किसी अजनबी मर्द को न देखे और कोई अजनबी मर्द उसे न देखे, और रसूल का बेटी को सीने से लगा लेना, यह एक ऐसा सबक था जो कर्बला की हर फातिमी औरत ने

दिल व जान से सुना। यह गैरत व हमीयत कर्बला की हर खातून ने पायी थी और कर्बला से कूफे और कूफे से शाम तक इसकी अनगिनत मिसालें हैं। दमिश्क़ के करीब पहुंच के जनाब उम्मे कुलसूम की शिम्र से यह फ़रमाइश कि जब शहर में प्रवेश करना तो हमें ऐसे रास्ते से ले चलना जहां हुजूम कम हो, और सरों को हमसे दूर ले के चलना, नामहरम लोगों की निगाह का बार हमारी गैरत से नहीं उठता क्या यह और ऐसे बहुत से अनुरोध फातिमी गैरत को जाहिर नहीं करते और नहीं मालूम होता कि फ़ातिमी खून इन की रगों में है। झुकी हुयी निगाहें और बालों से छिपे हुए चेहरे बता रहे हैं कि फातिमी गैरत और लाज की नक़ाबें, सरों से चादर उतार लिये जाने के बाद भी इनके सरों पर है। क्या जनाब सैय्यदः का अपने बाप की वफ़ात पर तारीखी मरसियः और अदालत ''फिदक'' के बारे में ज़लजलः डाल देने वाला बयान, जनाब जैनब और जनाब उम्मे कुलसूम के कानों तक नहीं पहुंचा। नहीं! जब जनाब जैनब इब्ने ज़ियाद का मुंह अपनी तर्कना से सी रही थी और जब यजीद को अपनी तक़रीर से गूंगा बना रही थी, उस वक्त जैनब के सीने में फ़ातिमः का ही दिल दहन में फ़ातिमा की ही जबान थी। वही कुर्आन और हदीस से तर्कना, बयान का वही जोर जुर्अत, वही स्पष्टता। अगर किसी ने सैय्यदः की तारीख पढ़ी है और वह जैनब से नावाकिफ़ है, तो बोलने का अन्दाज, तर्क वितर्क की शक्ति, शेरानः हिम्मत से उसका जेहन फातिमी खुसूसीयतों की तरफ मुड़ जायेगा। यह तो जनाब जैनब और खवातीने करबला की ननिहाली तरबियत की हलकी सी तस्वीर थी।

दधियाली खवातीन के कारनामे भी कम सबक आमोज नहीं। जनाब जैनब की दादी फ़ातिमः बिन्ते असद एक खास रूह की मालिकः थीं, वह जिन्दगी के आखिरी वक्त तक साक्षात अमल रहीं। हुजूर[स०] की मां का निधन आप के बचपन में ही हो गया आप जनाब फ़ातिमा बिन्ते असद की गोद के पाले हैं और हुजूर[स०] की ज़िन्दगी में आप का काफी हिस्सा है। और आप ही की तरबियत में जाफरे तैय्यार और हज़रत अली[अ०] ने हुजूर के लिये फिदाकारी की तालीम पायी। फ़ातिमा बिन्ते असद बहुत बूढ़ी हो जाने के बाद भी थकावट का नाम नहीं जानती थीं, सरापा अमल थीं। जहां रहीं वहां जीवन और जागरूकता की मिसाल बन के रहीं। भतीजे के साथ उनकी मोहब्बत और मेहरबानियों का यह आलम था कि आप को हुजूर[स०] मां कहते थे। आप की बदौलत हुजूर[स०] को यतीमी का कष्ट महसूस नहीं होने पाया। जब जनाब सैय्यदः की शादी हजरत अली[अ०] से हुयी तो फातिमः बिन्ते असद एक मेहरबान मां की तरह उनके आराम और राहत की निगरां रही। कठिन काम अपने जिम्मे लिये। बुढ़ापे में कुंए से पानी भर के लाना, जलौनी लकड़ी चुन के लाना, और घर बाहर की तमाम जरूरतों को हंसी खुशी अपने सर लेना एक अनुकरणीय मिसाल थी। जनाब जैनब की ज़िन्दगी पर उनका असर बहुत गहरा मालूम होता है। कर्बला की खवातीन में अगरचे उनकी बहन जनाबे कुलसूम का भी नाम आता है, और जनाब रमलः इमाम बिन हसन[अ०] की ज़ौजः और जनाब रबाब भी हैं लेकिन तमाम जिम्मदारियां जनाब जैनब ने अपने सर ले लीं। ऐसा लगता है कि इमाम के साथ जनाब जैनब के सिवा कोई और खातून थीं ही नहीं बहन की खबरगीर, भाईयों की खैरतलब, भतीजो भतीजियों की फिदायी, भावजों की मेहरबान, सारे घर की खुशनूदी और राहत रसानी की चिन्ता, बच्चों में अपने बाप, दादा की तालीम का फैलाना और फातिमी जीवन धारा की राह दिखाना, यह सब उच्च कोटि के गुण जनाब जैनब की जिन्दगी में यूं फैले हैं जैसे दरख्त की जड़ें ज़मीन के चारों ओर फैलती हैं।

अगर मैंने उम्मे हानी की चर्चा न की तो

एक जरूरी नाम के भूल जाने का आरोप मुझ पर लग सकता है। आप हजरत ज़ैनब की हक़ीकी फूफी थीं। जनाब उम्मे हानी का अक़द इस्लाम पूर्वकाल में हबीरः बिन अम्र मखजूमी के साथ हुआ था। उम्मे हानी ने इस्लाम कुबूल कर लिया, शौहर अपने धर्म पर बने रहे। इस्लाम ने तौहीद का रिश्ता शिर्क से तोड़ दिया। उसकी औलाद की दीक्षा देख के हुजूर[स०] ने फर्माया कि कुरैश से बेहतर औरतें कहीं नहीं पैदा हुयीं। औलाद पर जो जान से फिदा, पति की वफादार। जनाब उम्मे हानी से इस्लाम को बहुत यश पहुंचा। सुन्नी भाईयों की हदीस की मश्हूर छः किताबों में और उनके अलावा अन्य पुस्तकों में भी आप की बयान की हुयी काफी तादाद में हदीसें ली गयी हैं। इनके सुपुत्र जोदा और उनके पोते यहया और नवासे हारून और गुलाम अबूबर्रः, अबू सालेह और उनके चचेरे भाई बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नोफिल हाशिमी और अब्दुल्लाह के साहिबजादे अब्द बिन अबी लैला और मुजाहिद आदि ने इन से बहुत रिवायतें की हैं। मक्के की विजय पर जनाब उम्मे हानी ने कुछ मुश्रिकीन को अपने घर में शरण दी थी और उन्हें भरोसः था कि उनका यह कदम हुजूर[स०] को नागवार न होगा। हज़रत अली[अ०] को मालूम हुआ तो चेहरे पर नक़ाब डाले हुये आप उम्मे हानी के घर में चले गये।

जनाब उम्मे हानी को यह नहीं मालूम था कि यह हज़रत अली[अ०] हैं। पहले तो आपने घर में दाख़िल होने से रोका। जब वह नहीं रूके तो हाथ पकड़ लिया और क़सम खायी कि मैं तुम्हारी शिकायत हज़रत पैग़म्बर[स०] से करूंगी जब हज़रत ने नक़ाब चेहरे से हटायी तो पहचाना कि कोई ग़ैर नहीं। अली हैं। अपनी क़सम पूरी करने के लिये हुजूर[स०] के पास आयीं। हज़रत भी साथ–साथ थे। हुजूर[स०] ने किस्सा पूछा, तो उम्मे हानी के बाद हज़रत अली[अ०] ने वाकिअः बयान किया और कहा कि जब उम्मे हानी ने मेरी कलाई पकड़ी तो मैं बेबस हो गया। तब हुजूर[स०] ने बहुत मूल्यवान शब्दों में उम्मे हानी की जुर्अत और बहादुरी की तस्दीक की, फर्माया कि अगर अबूतालिब के वंश से दुनिया भर के लोग होते उनमें कोई बुज़दिल और कायर न होता। बल्कि सब वीर शोर होते।

हज़रत उम्मे हानी ने लम्बी उम्र पायी। हज़रत अली[स०] की शहादत तक वह जिंदा रहीं। आप सरीखे खैबर के विजेता और ''मरहब शिकार'' का उम्मे हानी के दिल की कुव्वत, जुर्अत और जियालेपन का इक़रार कोई मामूली स्वीकारोक्ती नहीं है। इस राशनी में हमें जनाब ज़ैनब के आत्मविश्वास का भेद जानना चाहिए हज़रत ज़ैनब के रस्सों में बंधे हुये बाजुओं को देखकर यह न समझना चाहिए कि उन में तवानाई न थी। बल कि बनी उमैय्या की बे मज़हबी और वहशियानः जुल्म को बेनक़ाब करने के लिए जनाब ज़ैनब ने उनके जोर जुल्म सह लिये नहीं दसवीं मोहर्रम की शाम तक कर्बला में जंग का सिलसिला खत्म न होता। ग्यारहवीं मोहर्रम को हाशिमी खवातीन की वीरता का इतिहास दुहराया जाता। सफीयः और उम्मे हानी की याद फिर ताजः हो जाती।

चाहे कर्बला के हाशिमी मर्द हों या औरतें, इन सब के कमालात इनके बुजुर्गों की तरबियत का नतीजा थे। बनी उमैय्या और बनी फातिमा में दीक्षा–शिक्षा के सिद्धान्त बिलकुल अलग–अलग थे। खासकर खवातीन की तरबियत दोनों में अलग–अलग रूप की थीं, जिस तरह अश्मीना (यूनान) में दुराचारी औरतों को सर पर चढ़ाया जाता था और गाने नाचने वालियां सर का मुकुट बनी हुई थीं। वैसे ही इस्लाम के पहले अरब देश में भी कुछ घरानों को छोड के औरतों की हालत बहुत गिरी हुई थी शहर के आवारः मिज़ाज मर्द गंवार औरतों को सताते थे। बनी उमैय्या ने इस्लामी सभ्यता को स्वीकार नहीं किया। वह इस्लाम पूर्व के ''जाहिली'' युग की सभ्यता के

चाहने वाले थे, जिनमें बोतल बकरे के साथ बाला भी एक अंग थी और उसकी पवित्रता का उन्हें जरा सा भी ध्यान न था। जब तक अरब में उमवी शासन अज़ाब के समान मानवता के गले की गरदन का छुरा बना रहा, औरत उसी अपमान पूर्ण मक्सद के अन्तर्गत जीवन बिताती रही। जब उमैय्या के पांव अरब से उखड़ गये और उनके राज्य का अंत हो गया और उन्दुलुस में उनकी हुकूमत क़ायम हो गयी तो वहां भी यह बीमारी फैल गयी, सैनिक जब रण क्षेत्र में जाते थे, तो रजज़ में अपने धर्म या मान सम्मान पर गर्व के बजाय अपनी चहीतियों, महबूबाओं के बारे में कविता पाठ करते थे और जिनके चित्र या कोई अन्य प्रतीक अपनी तलवार और अस्लहों पर अंकित कर लिया करते थे। औरत के विषय में यह उमैय्या वालों के रूजहान थे। इसके विपरीत हज़रत अली[अ०] ने अपने शासन काल में औरतों के सामने उच्च कोटि के उद्देश्य रख दिए। इनकी तरक्की और प्रगति के सहीह अवसर दिये। उच्च उद्देश्य के मातहत उनको शिक्षा परिशिक्षा की राह दिखायी। आप के ज़माने में सूदः बिन्ते अम्मार बिन अश्तर हमदामनीः, जरता बिन्ते अदी, क़ैस हमदानियः उम्मे सनां, अस्करशः और दूसरी शेर दिल खवातीन ने उमवी सियासत के खिलाफ अमीर मुआवियः के दरबार में जो बरजस्तः बिजली भरी कवितायें पढ़ी, भाषण दिये हैं। उन से हज़रत अली[अ०] की फूंकी हुयी रूह का सच्चा इज्हार होता है। आप के युग में ख़वातीन ने ज़िन्दगी में अपना स्थान जान लिया वह समझने लगी कि वह इस तरह एक बेज़बान औरत नहीं जिन्हें मर्द अपनी गोष्ठी की सजावट का सामान समझे जैसा कि उमैय्या वालों का दृष्टिकोण था। बल्कि हक़ और सच्चाई की रक्षा के लिए शक्तिशाली दिल रखती थी और अपने धर्म, जीवन पद्धति और सिद्धान्तों के लिए जंग में अपनी स्वाभाविक क्षमता के अन्दर जी जान से भाग ले सकती थीं, जब हज़रत के इर्शादात व हिदायात से असर ले के जन साधारण में ऐसी औरतें पैदा हो गयीं जिन के मन पर हुकूमत का कोई रोब नहीं, मौत का कोई डर नहीं तो इमाम ने खुद हजरत जैनब और उम्मे कुलसूम को कैसा बनाया होगा। और इमाम हुसैन[अ०] ने इनकी किन सलाहियतों पर भरोसा कर के और पूरी जम्ए खातिरी से उन्हें साथ लिया होगा। यह इतना ऊपरी सवाल नहीं है कि सरसरी तौर से समझ लिया जाये। खवातीन कर्बला की रूहानी और समाजी जिन्दगी न मिटने वाली दौलत थी जिन्हें ख़वातीने कर्बला ने विरसे (थाती) में पाया। और इनमें बेहिसाब बढ़ोत्तरी की।



(पेज नं0 16 का बक़िया...............)

इस घटना के पश्चात लगभग दस मास व्यतीत हो गये थे कि अकस्मात एक दिन सवेरे की डाक से सिचियाँग को एक विदेशी पत्र मिला, सिचियाँग ने लिफाफा खोला तो अंगेज़ी भाषा में एक अपर्याप्त पत्र मिला जो इस प्रकार था––

न्युयार्क, 26 नवम्बर 1962 ई०

प्रिय मित्र !

''आशा है तुम सकुशल होगे। तुम से विदा होकर मैं दूसरे दिन अपने देश के लिए प्रस्थान कर गया था। इस बीच पत्र न भेजने की क्षमा चाहता हूं। जबसे मैं यहां लौटकर आया हूं मेरा कार्य केवल इस्लामी इतिहास का अध्ययन करना है, और आज मैं यह बात कहने पर विवश हो गया कि–

''हुसैन''–एक महान आत्मा तथा उच्च चरित्र के वाहक थे जिन पर मानवता को गर्व रहेगा, साथ ही साथ वे निर्दोश और अमर हैं।

'यज़ीद':– पापी और अत्याचारी होने के साथ साथ एक ऐसा मानव शत्रु एंव हत्यारा था जो मानवता के माथे का कलंक है।

मैं तुम्हारे इस पथ प्रदर्शन का कृतज्ञ हूं।''

तुम्हारा केली ब्राउन

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 554 मुहर्रम 1388 हि0/अप्रैल 1968 ई0)

